International Journal of History 2020; 2(2): 121-123

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(2): 121-123
Received: 04-06-2020
Accepted: 02-08-2020

संजय साह
(इतिहास विभाग) ल0ना0मि0वि0, दरभंगा, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
संजय साह
(इतिहास विभाग) ल0ना0मि0वि0, दरभंगा, दरभंगा, बिहार, भारत

प्राचीनकालीन भारत का सामान्य परिचय

संजय साह

सारांश
भारतवर्ष का जो प्राचीन इतिहास है वह भारत की समृद्धि का आभास हमें देता है। प्राचीनकालीन भारत में विभिन्न वंशों द्वारा शासन कार्य को सुचारू स्वरूप प्रदान करना एवं मौर्यवंश तक आते–आते एक केंद्रीय सत्ता की स्थापना भारत की सुदृढता का परिचायक है। इस काल की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक दशाओं ने भारत पर सकारात्मक प्रभाव डाला।

प्रस्तावना
भारतवर्ष का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। पूर्वकाल में लोग इस पर विश्वास नहीं करते थे, किंतु हड़प्पा–मोहनजोदड़ों तथा सिंधु घाटी की सभ्यता के पुरातात्विक अवशेषों को पाने के साथ ही विश्व को यह मानना पड़ा कि प्रागैतिहासिक काल में भी इस देश की सभ्यता एवं संस्कृति का एक अपना अद्भुत इतिहास था। इस इतिहास को चार भागों में विभाजित कर हम इसका अध्ययन करते हैं–(1) पूर्व पाषाण एवं उत्तर पाषाणयुगीन सभ्यता, (2) प्रागैतिहासिक युग की जातियाँ एवं उनकी सभ्यता, (3) सिंधु घाटी एवं आर्यों की सभ्यता, (4) सिंधु घाटी की आर्थिक एवं सामाजिक दशा।
दीगर बात है कि भारतवर्ष के द्वितीय चरण के इतिहास का आरंभ वैदिक सभ्यता के नाम से जाना जाता है। जैसा कि यह नाम से ही प्रतीत होता है कि इस युग में धार्मिक मान्यताओं की बहुलता थी। वैदिक काल के बाद उत्तर वैदिक काल में भी धार्मिक भावनाओं को ही अधिक महत्त्व दिया गया और धर्म पर ही सामाजिक, आर्थिक आदि व्यवस्थाएँ निर्भर करती थीं। कालांतर में छठी शताब्दी ई0पू0 में भारत में धार्मिक आंदोलन छिड़ गया और वैदिक धर्मों में आए फूहड़पन के विरोध में ब्राह्मण लोगों की व्यवस्थाओं को अमान्य करते हुए क्षत्रिय वर्ण ने अनीश्वरवादी धर्म की स्थापना की, जिसमें जाति–वर्ग, धर्म–सम्प्रदाय आदि का भेदभाव नहीं था, जिसके कारण उन्हें समाज के सभी वर्ग का समर्थन मिला किंतु ब्राह्मण वर्ग इसके घोर विरोधी थे। ब्राह्मणों के विरोधों के बावजूद कुछ ब्राह्मणों ने अनीश्वरवादी जैन एवं बौद्ध धर्म को अपनाया।
आपसी कलह और ईर्ष्या की भावना के कारण लम्बे समय तक भारत में कोई केंद्रीय शासन–सत्ता स्थापित नहीं हो पाई थी और देश टुकड़ों में बँटकर राजवंशों द्वारा सत्ता के संघर्षों की कहानी दुहराता रहा। लोगों में राष्ट्रीयता की भावना नहीं के बराबर थी। इनमें आपसी फूट थी जिसने आगे चलकर देश में विदेशी आक्रमणों को प्रोत्साहित किया और बाद में देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा भी गया। यदि भारतवर्ष के क्रमबद्ध इतिहास पर हम नज़र डालें तो इसका भान में सिकन्दर के आक्रमण से ही होता है। छठी शताब्दी ई0पू0 में उत्तरी भारत के राज्यों में मगध के अतिरिक्त कोशल, अवन्ति, वत्स, काशी, अंग, वज्जि, मल्ल, चेदि, कुरू, पांचाल, अश्मक, मत्स्य, सूरसेन, कम्बो, गांधार आदि थे, परंतु उनमें सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य मगध ही था। मगध राज्य के संवर्द्धन की कहानी भी काफी पुरानी है। आर्यों के आधिपत्य के पहले मगध में दस्यु निवास करते थे। उनको विजित करके वृहद्रथ ने मगध में आर्यों का राज्य स्थापित किया। उसके अननंतर शिशुनाग वंश ने राज्य किया। उनके शासनकाल तक मगध की राजधानी गिरिब्रज थी। बुद्ध के समय तक मगध राज्य पर हर्यकवंश का आधिपत्य हो चुका था, जिसका पहला राजा बिम्बिसार था जो बुद्ध का समकालीन था। वह बुद्ध की मृत्यु के 60 वर्षों के बाद भी मगध का राजा बना रहा। यदि महात्मा बुद्ध की मृत्यु का काल 483 ई0पू0 माना जाय तो बिम्बिसार का राज्यारोहण 546 ई0पू0 माना जा सकता है, हालांकि इस विषय पर विद्वानों में मतभेद है। बहरहाल, बिम्बिसार ने गिरिब्रज के स्थान पर राजगृह को अपनी राजधानी बनाया। बाद में उसकी हत्या उसी के पुत्र अजातशत्रु ने कर दी और 551 ई0पू0 तक वह मगध का राजा बना रहा। कुछ विद्वान अजातशत्रु का उत्तराधिकारी उदायी को मानते हैं। उदायी के शासनकाल तक मगध की राजधानी पाटलिपुत्र हो चुकी थी। उदायी के बाद मगध के उत्तराधिकारियों के विषय में कुछ विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती, किंतु पुराणों के अनुसार नन्दिवर्द्धन तथा महानन्दी उसके उत्तराधिकारी थे। महानन्दी ने एक दासी से विवाह कर

लिया जिसका पुत्र महापद्म महानन्दी का उत्तराधिकारी बना और यहीं से शूद्र वंश राज्य का सूत्रपात माना जाता है। महापद्म नंद था, जो बाद में नंदवंश का संस्थापक हुआ, किंतु इसके ठीक उलट जैन अनुश्रूति के अनुसार महापद्म नंद एक नाई का पुत्र था, किंतु रानी उसपर आसक्त हो गई जिसके फलस्वरूप रानी से मिलकर उसने सम्राट की हत्या करके गद्दी अपने हाथों में लिया। धीरे–धीरे वह समस्त राजकुमारों की भी हत्या करवा कर सम्पूर्ण राज्य का एकछत्र सम्राट बन बैठा।

इतिहासविद् मजूमदार के अनुसार नंदवंश में कुल नौ राजाओं का होना बताया है जिन्हें घनानंद के नाम से सम्बोधित किया जाता है। नंदवंश चूंकि शूद्र थे और यही कारण है कि वह ब्राह्मणों के घोर विरोधी थे। इस वंश के राजा जैन धर्म के अनुयायी थे, जिसके कारण इस वंश के अंतिम राजा घनानंद के द्वारा कौटिल्य का अपमान किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप चंद्रगुप्त मौर्य और कौटिल्य ने मिलकर 322 ई0पू0 में इस वंश का नाश कर दिया।

दीगर बात है कि जिस समय सिकन्दर महान ने भारत पर आक्रमण किया उस समय मगध में नंदवंश का ही शासन था, जिसके पास चल–अचल सम्पत्ति के साथ दो लाख पैदल, तीस हजार घोड़े, पाँच हजार हाथी तथा दो हजार रथों वाली विशाल सेना थी। उनका सैन्य संगठन देखकर सिकन्दर का साहस न था कि वह मगध पर आक्रमण करे। अंततः उसने चालाकी से उन राज्यों को विजित किया जो परस्पर वैमनस्य, व्यक्तिगत ईर्ष्या, और राष्ट्रीयता की भावना से परामुख थे। इसी समय चंद्रगुप्त मौर्य ने अपनी शक्ति बढ़ाकर चाणक्य के सहयोग से नंदवंश को समाप्त कर मगध एवं अन्य राज्यों को जीतकर भारतीय इतिहास में पहली बार केंद्रीय राजतंत्र की स्थापना की। मुख्य रूप से मौर्यवंश से ही प्राचीन भारत के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं संस्कृतिक परिस्थितियों का सही–सही अवलोकन किया जा सकता है–

सामाजिक परिचय

पूर्व वैदिक कालीन समाज में व्यक्ति की अपेक्षा परिवार को ही समाज की इकाई माना जाता था और परिवार पितृ–प्रधान था। संयुक्त परिवार की प्रथा थी। जाति के आधार पर समाज में पहले आर्य और आर्येतर दो वर्ग थे। आर्यों में तीन वर्ग थे– पुरोहित, राजन्य और कृषक। समाज का जातिगत वर्गीकरण सम्पन्न नहीं हो पाया था। स्त्री–शिक्षा की स्वतंत्रता थी। बाल–विवाह की प्रथा न थी तथा स्त्री को अपना पति चयन करने की स्वतंत्रता थी।

उत्तर वैदिक काल में रेशमी वस्त्रों का प्रयोग होने लगा था। मनोरंजन के साधनों का भी विकास हुआ–नटों का कार्य करने वाले शैलूष कहलाए। स्त्रियों के स्थान का पतन हुआ और कन्या के जन्म पर शोक प्रकट किया जाने लगा।

महाकाव्य काल में भी समाज में वर्णाश्रम धर्म का काफी महत्त्व लेकिन वर्ण–व्यवस्था में काफी जटिलता आ गई। ब्राह्मणों का वर्चस्व लगभग समाप्त हो गया और राजसत्ता क्षत्रियों के हाथों में चली गई। इस काल में स्त्रियाँ दास कहलाईं। बहु–विवाह की प्रथा भी आरम्भ हो गई।

धार्मिक आंदोलन के युग में भारतीय समाज को नये प्रतिरोधों, चुनौतियों और परिवर्तनों का सामना करना पड़ा था। ब्राह्मणों के स्थान पर क्षत्रियों का प्रभुत्व था। वैश्यों का महत्त्व बढ़ गया था। वर्ण एवं जाति–प्रथा को अस्वीकार किया गया। राजा को स्वामी का नाम देने के स्थान पर उसे जनता का सेवक कहा गया।

मौर्ययुगीन समाज वर्ण के आधार पर अवश्य स्थित था, किंतु श्रम और पेशे पर भी उनका विभाजन आधृत था। मौर्य साम्राज्य का पतन क्षत्रिय–ब्राह्मण जातियों की सामाजिक प्रतिद्वंद्विता और प्रतिक्रिया का प्रतिफल था। मौर्यवंश में अंतर्जातीय विवाह का प्रचलन था किंतु तीन वर्णों में ही परस्पर वैवाहिक सम्बंध होते थे। स्त्रियों की दशा अच्छी थी। दास–प्रथा भी प्रचलन में था। समाज में शांति, सुख–चैन का वातावरण था।

धार्मिक परिचय

प्राचीन काल से ही भारतीय लोगों का जीवन धर्मगत उत्कंठा से अनुप्राणित रहा है। आरंभ में इसे वर्णगत धर्म की संज्ञा दी गई किंतु बाद में आश्रम–व्यवस्था के नियोजन के पश्चात इस वर्णाश्रम धर्म भी कहा गया। यों तो इसका जन्म ऋग्वैदिक काल से ही हो गया था किंतु इसका यथेष्ट विकास उत्तर–वैदिक काल से हुआ। ब्राह्मण को धर्म का प्रतिनिधि माना गया और उनके बिना याज्ञिक कार्य असम्भव माना गया।

वैदिक धर्म के प्रधान प्रेरक चूंकि ब्राह्मण थे इसलिए कालांतर में उस धर्म को लोग ब्राह्मण धर्म या हिन्दू धर्म भी कहने लगे। ब्राह्मण धर्म के अंतर्गत संन्यास और तपश्चर्या का जीवन श्रेष्यकर माना गया, जिसमें सत्य का साक्षात अनुभव होता था। उस समय मूर्तिपूजा होती थी। मातृ–पूजा की विशेष प्रथा थी और लोग बहुदेवताओं को मानते थे। मुख्य आराध्य शिव थे और लोग लिंग की पूजा में विश्वास रखते थे। पीपल आदि वृक्षों की पूजा करने के साथ ही लोग भूत–प्रेत में भी विश्वास करते थे। अग्नि, सूर्य एवं जल की भी पूजा होती थी। लोग भक्ति–मार्ग एवं पुनर्जन्म में भी विश्वास रखते है।

महाकाव्य काल में यज्ञ तथा अनुष्ठानों का बाहुल्य था। चक्रवर्ती राजा बनने के लिए अश्वमेघ यज्ञ आवश्यक था। वनों में ऋषि–मुनि बड़े–बड़े यज्ञ कराते थे। अवतारवाद का सिद्धांत प्रसारित हो रहा था। यज्ञो में बलि की प्रथा प्रचलित थी। पौराणिक धर्मों को पुनः प्रतिष्ठित किया जाने लगा और इसमें पुराणों का सबसे अधिक योगदान था। पुराणों की उत्पत्ति यज्ञ से मानी जाती है। उनमें वैदिक विचार–तत्वों का निवेशन रहता है। वैदिक धर्म को पुराणों के माध्यम से सरल करके प्रस्तुत किया गया है।

मौर्यवंश में ब्राह्मण–हिंदूधर्म, बौद्ध–धर्म और जैन–धर्म तीनों को विकास का अवसर प्रदान किया गया। उस समय धार्मिक सहिष्णुता का भाव पाया जाता था जो इसके पूर्व कभी देखने को नहीं मिला था। इस युग में शिव के एकमुख, चतुर्मुख, लिंग त्रिशूल, नंदी, दुर्गा, विष्णु, अहिल्या, राम, सीता, लक्ष्मण, कृष्ण, बलराम, कार्तिकेय, गणेश आदि की मूर्तियों को भी पूजा जाता था।

आर्थिक परिचय

भारतीय समाज का आर्थिक मूल्यांकन पुरुषार्थ–चतुष्ट्य के जीवन–दर्शन से हुआ है। प्राचीन भारतीय चिंतकों ने अर्थोपार्जन विषय से सम्बंधित विषय के लिए ''वार्त्ता'' शब्द का व्यवहार किया है। ''वार्त्ता'' शब्द मनुष्य के आर्थिक जीवन के कार्य–कलापों से सम्बंधित था। विभिन्न विद्वानों और मनीषियों ने ''वार्त्ता'' शब्द का सम्बंध ''वृत्ति'' से माना। इसके अंतर्गत कृषि, पशुपालन, वाणिज्य, उद्योग–धंधे एवं व्यवसाय आदि का सन्निवेश था।

प्रागैतिहासिक युग में कृषि लोगों का मुख्य पेशा था। सिंधु घाटी के लोगों को कृषि का अच्छा ज्ञान था। नगरों के लोग कताई, बुनाई, बर्तन निर्माण, खिलौनों का निर्माण आदि भी किया करते थे। मकान एवं आभूषण बनाने की कला में भी वे निपुण थे तथा साथ ही पशुपालन भी लोग किया करते थे।

उत्तर वैदिक काल में भी जीवन–यापन का मुख्य आधार कृषि ही था। लोग पशुपालन में अधिक विश्वास रखते थे। उस समय तक लघु कुटीर उद्योगों का पर्याप्त विकास हो चुका था। समाज में लोहार, बढ़ई, स्वर्णकार, चमार, मछेरे, गोप, रंगसाज आदि पाए जाते थे। उस समय सोना, लोहा, टिन, ताम्र, रजत आदि का खुलकर प्रयोग होता था।

महाकाव्य काल में भी उत्तर वैदिक काल जैसी ही व्यवस्था अपनाई गई थी किंतु मौर्यकाल में अर्थ–प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया गया। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से स्पष्ट है कि आर्थिक जीवन

को व्यवस्थित रखने के लिए नियोजन के जितने भी उत्तम उपाय उस समय किये गये थे, उसके पूर्व कभी नहीं हो सका। कृषि, पशुपालन, उद्योग–धंधे, कुटीर उद्योग आदि को प्रश्रय दिया गया। सिक्कों का प्रचलन आरंभ हो गया था।

राजनैतिक परिचय

प्राचीन भारत की राजनैतिक दशा का भान हमें इससे ही हो जाता है कि उस समय गणतांत्रिक शासन–प्रणाली प्रचलित थी। तत्कालीन लोग युद्धप्रिय नहीं थे वह शांतिप्रिय जीवन पसंद करते थे। अस्त्र–शस्त्र प्रायः ताँबे के निर्मित होते थे जिनमें कुलहाड़ी, भाले, तीर–कमान, तलवार, कवच आदि प्रमुख थे।

पूर्व वैदिक काल में आर्य लोगों की सभ्यता में राजनीतिक इकाई परिवार को ही माना जाता था। परिवार का सबसे बड़ा वृद्ध एवं अनुभवी व्यक्ति पिता ही परिवार का प्रधान होता था, जो सभी सदस्यों का सही ढंग से पालन–पोषण करता था। परिवार के आंतरिक विवादों में सम्राट भी दखल नहीं दे सकता था। परिवार के समूह को मिलाकर ग्राम बनता था और उसका प्रधान ग्रामणी कहलाता था। ग्रामों को सम्मिलित करके विश बनता था जिसका प्रधान विशपति कहलाता था और अंततः विशों को मिलाकर जन अथवा जनपद बनता था जिसके प्रधान को राजन कहते थे।

उत्तर वैदिक काल में आर्यों ने भारत के पूर्वी भागों को बढ़ाना प्रारंभ कर दिया। वे पंजाब से आगे चलकर गंगाा, यमुना और सरस्वती के विस्तृत भू–भाग में निवास करने लगे थे। गुप्तवंश में राजनैतिक दशा अपने चरम पर थी। इसमें छोटे–छोटे राज्य होते थे, जिनमें आपसी भेद–भाव पनपना आरंभ हो गया था। कुछ बड़े जनपद भी थे। राज्य विस्तार की भावना उन दिनों भी थी।

सांस्कृतिक परिचय

प्रागैतिहासिक काल में कला–कौशल की खूब उन्नति हुई। मिट्टी के बर्त्तन, धातु की मूर्ति आदि उनके सांस्कृतिकता का परिचय कराती है। पूर्व वैदिक काल में ऋग्वेद की रचना की जा चुकी थी लोग लिखना तो नहीं जानते थे किंतु उसकी ऋचाओं को कंठस्थ करते थे। उत्तर वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था का आरंभ हुआ जिसके अंतर्गत शिष्यों को वेदों के साथ उपनिषद्, तर्कशास्त्र एवं व्याकरण की भी जानकारी दी जाती थी।

कुल मिलाकर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्राचीन कालीन भारत की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक दशाएँ निरंतर विकासोन्मुख थीं।

संदर्भ–ग्रंथ

1. अमरकोष, अमरसिंह, टीकाकार पं0 हरिगोविन्द शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1978
2. अर्थशास्त्र (कौटिल्य), व्याख्याकार वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा प्रकाशन विद्याभवन, वाराणसी, 1962
3. दिव्यावदान, संपादक पी0 एल0 वैद्य, मिथिला विद्यापीठ प्रकाशन, दरभंगा, 1959,
4. प्राचीन भारतीय वेश–भूषा, मोतीचंद्र, प्रकाशन भारती भंडार, प्रयाग, 2007
5. वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा, सत्यप्रकाश, प्रकाशक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1954
6. कालिदास इन इण्डिया, भगवतशरण उपाध्याय, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 1968